⇒ जाति प्रथा के गुण तथा दोष :— भारत में जाति का अस्तित्व इस बात का द्योतक है कि वह समाज और राष्ट्र के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य करती रही है। इसने समाज को स्थायित्व एवं संगठन प्रदान किया है। हट्टन ने जाति के कार्यों को प्रमुख तीन भागों में बांटा है —

(i) व्यक्ति के लिए कार्य
(ii) जाति समुदाय के लिए कार्य
(iii) सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र के लिए कार्य।

(1) सदस्यों के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित कार्य → जाति व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक के कार्यों को प्रभावित करती है। एक व्यक्ति क्या खायेगा, कहां खायेगा, वस्त्र आभूषण पानी विवाह आदि का निर्धारण जाति द्वारा ही होता है। जाति अपने सदस्यों के लिए निम्न कार्य करती है :—

(1) जाति ही व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करती है → प्रत्येक जाति की समाज में एक निश्चित स्थिति है। एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है उसकी सामाजिक स्थिति भी उस जाति के अनुसार ही ऊंची अथवा नीची मानी जाती है।

01 THURSDAY 182-183 WK 27

(ii) पेशे का निर्च्चारण → प्रत्येक जाति का एक परम्परात्मक व्यवसाय होता है।

(iii) विवाह समूह का निर्च्चारण → प्रत्येक उपजाति एक अन्त-विवाही समूह है। व्यक्ति अपनी जाति में ही विवाह करता है।

(iv) सामाजिक सुरक्षा → जाति ही व्यक्ति को आपत्तिकाल में अधिक सहायता प्रदान करती है। जन्म, विवाह, दाह-क्रिया, आदि अवसरों पर जाति के सदस्य ही एक व्यक्ति को सहयोग प्रदान करते हैं।

(v) व्यवहारों पर नियन्त्रण → जाति व्यक्ति के व्यवहार पर नियन्त्रण रखती है। खान-पान, विवाह, व्यवसाय, जातियों के पारस्परिक सम्बन्धों, आदि को लेकर, प्रत्येक जाति के नियम बने हुए हैं जिनका एक व्यक्ति को पालन करना होता है। ऐसा नहीं करने पर उसे जाति पंचायत द्वारा निर्च्चारित दण्ड का भागी बनना होता है।

2. जाति समुदाय के सम्बन्धित कार्य → एक जाति अपने सदस्यों के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण जाति समुदाय के लिए भी कई कार्य करती है जो इस प्रकार है:—

(i) धार्मिक भावनाओं व संस्कृति की रक्षा → व्यक्ति की धार्मिक क्रियाओं पर उसकी जाति की स्पष्ट छाप अंकित है। प्रत्येक जाति के देवी-देवता, व्रत, त्यौहार, उत्सव, आदि पाए जाते हैं। प्रत्येक जाति की अपनी संस्कृति होती है जिसे जाति ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित करती है और बनाए रखती है।

(ii) रक्त की शुद्धता → चूंकि अपनी जाति के अतिरिक्त अन्य जातियों में विवाह करने की स्वीकृति नहीं होती इसलिए प्रत्येक जाति की रक्त शुद्धता बनी रहती है।

वर्तमान में यह विचार स्वीकार नहीं किया गया है।

(iii) सामाजिक स्थिति का निर्धारण → जाति संस्तरण में प्रत्येक जाति की सामाजिक स्थिति निश्चित है। सामूहिक प्रयत्न और आन्दोलनों के द्वारा एक जाति अपनी सामाजिक स्थिति को ऊंचा उठाने का प्रयास भी करती है।

(iv) सामूहिक उपयोग → जाति अपने सदस्यों को एकता के सूत्र में बांधती है और कठिनाई के समय सदस्य पारस्परिक सहायता को अपना कर्तव्य मानते हैं।

3. समाज व राष्ट्र के लिए कार्य → एक जाति सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए भी अनेक कार्य करती है।—

(i) समाज के विकास व संरक्षण में सहायता

(ii) राजनैतिक स्थिरता →
(iii) श्रम विभाजन की व्यवस्था →
(iv) दायित्व निर्वाह
(v) धार्मिक उदारता

→ जाति व्यवस्था के दोष:—

(i) निम्न जातियों का शोषण एवं धर्म परिवर्तन →
(ii) अस्पृश्यता के लिए उत्तरदायी
(iii) सामाजिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी
(iv) श्रमिकों की गतिशीलता एवं कुशलता में बाधक
(v) अकर्मण्यता एवं भाग्यवाद
(vi) प्रजातन्त्र विरोधी → जाति का आधार असमानता है, जबकि प्रजातन्त्र स्वतन्त्रता, समानता और भाई-चारे की भावना पर आधारित है। इस प्रकार प्रजातन्त्र व जाति एक-दूसरे के विरोधी हैं।